श्रीराम ध्यान रामायण—

शतपञ्च चौपाई

तथा

दैनिक श्रीसीताराम-स्तुति

लेखक एवं संगृहीता—

महात्मा श्रीरामलखन शरण जी

श्री प्रमोदवन चित्रकूट धाम

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा

तेजकुमार-प्रेस (प्रा०) लि०, लखनऊ में मुद्रित

चतुर्थवृत्ति २०००] सन् १९९५ ई०

T.K.B.D
Lko.
Rs. 3/-00

श्री किशोरी जी की जय

❀ प्राक्कथन ❀

अनन्त करुणावरुणालय भक्तभावनाविहारी, सर्वेश्वर सर्वाराध्य श्रीसीतारामजी महाराज की सदा ही जय हो, जिनकी कृपालवलेश से श्रीरामध्यान शतपञ्च चौपाई तथा दैनिक श्रीसीताराम स्तुति का यह प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ है।

इसमें श्री मानस रामायण में आये हुये प्रायः सभी स्थलों के श्री राघवेन्द्र सरकार के ध्यान की सङ्कलित चौपाइयाँ हैं। इसके श्रवण-पठन से श्रीराघवेन्द्र सरकार के ध्यान में चित्त-वृत्ति स्वाभाविक तदाकार हो जाती है। आगे दैनिक स्तुति और अवलोकनीय माहात्म्य प्रकरण है।

आशा है, यह पुस्तक उपासक भक्तों के लिये नितान्त उपयोगी सिद्ध होगी अतः इसके सङ्कलनकर्ता श्री चित्रकूट प्रमोदवन निवासी महात्मा श्रीरामलखन शरणजी महाराज तथा प्रकाशक श्री तेजकुमार भार्गव जी को हार्दिक धन्यवाद है।

इसके प्रूफ संशोधन आदि कार्यों में जो कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों उन्हें सभी पाठक महाशय जन क्षमा करके सुधार कर पढ़ने का कष्ट करें।

विनीत

सम्पादक

❀ भूमिका ❀

चौपाई

रीवाँ से दक्षिण दिशि दूरी ❀ रामनगर जानहु सुख भूरी
तहँ रह पिता जन्म अस्थाना ❀ विप्र तिवारी विज्ञ सुजाना

दो०—रामनगर लघु शहर है, बसा नदी के तीर।
देखत आमन की छटा, पुलकित होय शरीर ॥ १ ॥

यह दीन की प्रार्थना है कि जो कुछ इस पुस्तक में कहीं अक्षर तथा शब्दों की त्रुटि हो, उसे सुधार कर क्षमा करेंगे क्योंकि मुझमें विद्या-भक्ति आदि किसी साधन का बल नहीं है। महात्मा श्री केशव दासजी को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने लेख में दास को बहुत मदद दी है।

लेखक एवं संगृहीता:—
रामलखन शरण
श्रीप्रमोदवन, चित्रकूट

श्रीगणेशायनमः।

श्रीसीतारामाभ्यां नमः।

* अथ श्रीराम ध्यान रामायण शतपञ्च चौपाई *

श्लोक—गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥
सह प्रियस्त्वं हृदये वस प्रभो।
मुखे यशो नाम गुणानुवादनम्।
प्रीत्याऽर्चनं ते करवाणि सन्ततं
प्रदेहि मह्यं कृपया कृपाम्बुधे ॥ २ ॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं
सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महाशायकचारुचापं
नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥

श्रीमनु महाराज कृत ध्यान।

दो०—नील सरोरुह नीलमणि, नील नीर धर श्याम।
लाजहिं तनु शोभा निरखि, कोटि कोटि शत काम ॥ १ ॥

चौपाई।

शरद मयङ्क बदन छबि सींवाँ ❀ चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा ॥
अधर अरुण रद सुन्दर नासा ❀ बिधु कर निकर विनिन्दक हासा ॥
नव अम्बुज अम्बक छबि नीकी ❀ चितवनि ललित भावती जीकी ॥
भृकुटि मनोज चाप छबि हारी ❀ तिलक ललाट पटल द्युतिकारी ॥
कुण्डल मकर मुकुट सिर भ्राजा ❀ कुटिल केस जनु मधुप समाजा ॥
उर श्रीवत्स रुचिर वन माला ❀ पदिक हार भूषण मणि जाला ॥

केहरि कन्धर चारु जनेऊ ❀ बाहु विभूषण सुन्दर तेऊ ।।
करि कर सरिस सुभग भुज दण्डा ❀ कटि निषङ्ग कर शर को दण्डा ।।

दो०--तडित विनिन्दक पीत पट, उदर रेख वर तीनि ।
नाभि मनोहर लेति जनु, जमुन भवँर छबि छीनि ।। २ ।।

चौपाई ।

पद राजीव वरणि नहिं जाहीं ❀ मुनि मन मधुप बसहिं जिन्ह माहीं ।।
वाम भाग शोभति अनुकूला ❀ आदि शक्ति छबि निधि जग मूला ।।
छबि समूह हरि रूप विलोकी ❀ एक टक रहे नयन पट रोकी ।।

श्रीकौशल्याजी आदि माता कृत ध्यान ।

चौपाई ।

श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी ❀ निरखहिं छबि जननी तृण तोरी ।।
हृदय अनुग्रह इन्दु प्रकासा ❀ सूचत किरन मनोहर हासा ।।
काम कोटि छबि श्याम शरीरा ❀ नील कञ्ज वारिद गम्भीरा ।।
अरुण चरण पङ्कज नख जोती ❀ कमल दलन्हि बैठे जनु मोती ।।
रेख कुलिश ध्वज अंकुश सोहैं ❀ नूपुर धनि सुनि मुनि मन मोहैं ।।
कटि किङ्किणी उदर त्रय रेखा ❀ नाभि गँभीर जान जेहि देखा ।।
भुज विशाल भूषण युत भूरी ❀ हिय हरि नख अति शोभा रूरी ।।
उर मणि हार पदिक की शोभा ❀ विप्र चरण देखत मन लोभा ।।
कम्बु कण्ठ अति चिबुक सुहाई ❀ आनन अमित मदन छबि छाई ।।
दुइ-दुइ दसन अधर अरुणारे ❀ नासा तिलक को वरणै पारे ।।
सुन्दर श्रवण सुचारु कपोला ❀ अति प्रिय मधुर तोतरे बोला ।।
चिक्कन कच कुञ्चित गभुआरे ❀ बहु प्रकार रचि मातु सवाँरे ।।
पीत झँगुलिया तनु पहिराई ❀ जानु-पानि विचरनि मोहि भाई ।।
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा ❀ सोई जानइ सपनेहुँ जेहिं देखा ।।

श्री दशरथ कृत ध्यान ।

चौपाई ।

धूसर धूरि भरे तनु आये ❀ भूपति विहँसि गोद बैठाये ।।
करतल बान धनुष अति सोहा ❀ देखत रूप चराचर मोहा ।।

श्रीविश्वामित्र कृत ध्यान ।

चौपाई ।

अरुण नयन उर बाहु विशाला ❀ नील जलज तनु श्याम तमाला ।।
कटि पट पीत कसे वर माथा ❀ रुचिर चाप शायक दुहुँ हाथा ।।
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ❀ विश्वामित्र महानिधि पाई ।।

श्री जनक राज कृत ध्यान ।

चौपाई ।

श्याम गौर मृदु वयस किशोरा ❀ लोचन सुखद विश्व चित चोरा ।।
सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता ❀ आनँदहू के आनँद दाता ।।

श्री जनकपुर प्रवेश समय कवि कृत ध्यान ।

चौपाई ।

पीत वसन परिकर कटि माथा ❀ चारु चाप सर सोहत हाथा ।।
तनु अनुहरत सुचन्दन खोरी ❀ श्यामल गौर मनोहर जोरी ।।
केहरि कन्धर बाहु विशाला ❀ उर अति रुचिर नाग मणि माला ।।
सुभग सोन सरसीरुह लोचन ❀ वदन मयङ्क तापत्रय मोचन ।।
कानन्हि कनक फूल छबि देहीं ❀ चितवनि चितहि चोरि जनु लेहीं ।।
चितवनि चारु भृकुटि वर बाँकी ❀ तिलक रेख शोभा जनु चाँकी ।।

दो०--रुचिर चौतनी सुभग सिर, मेचक कुञ्चित केश ।
नख शिख सुन्दर बन्धु दोउ, शोभा सकल सुदेश ।। ३ ।।

श्रीजनकपुर वासिनी सखियों का ध्यान ।

चौपाई ।

श्यामगात कल कंज विलोचन ❀ जो मारीच सुभुज मद मोचन ।।
शोभा सीवँ सुभग दोउ बीरा ❀ नील पीत जलजाभ शरीरा ।।
मोर पंख शिर सोहत नीके ❀ गुच्छा बिच-बिच कुसुम कलीके ।।
भाल तिलक श्रम विन्दु सुहाये ❀ श्रवण सुभग भूषण छबि छाये ।।
विकट भृकुटि कच घूंघरवारे ❀ नव सरोज लोचन रतनारे ।।
चार चिबुक नासिका कपोला ❀ हास विलास लेत मन मोला ।।
उर मणि माल कम्बुकल ग्रीवा ❀ काम कलभ कर भुजबल सीवाँ ।।
सुमन समेत वाम कर दोना ❀ सावँर कुँवर सखी सुठि लोना ।।

दो०—केहरि कटि पट पीतधर, सुषमा शील निधान ।
देखि भानकुल भूषणहिं, विसरा सखिन्ह अपान ।। ४ ।।

रङ्ग भूमि में पुरवासियों का ध्यान ।

चौपाई ।

सहज मनोहर मूरति दोऊ ❀ कोटि काम उपमा लघु सोऊ ।।
शरद चन्द निन्दक मुख नीके ❀ नीरज नयन भावते जीके ।।
चितवनि चारु मार मद हरनी ❀ भावति हृदय जाति नहिं बरनी ।।
कल कपोल श्रुति कुण्डल लोला ❀ चिबुक अधर सुन्दर मृदु बोला ।।
कुमुद बन्धु कर निन्दक हाँसा ❀ भृकुटी विकट मनोहर नासा ।।
भाल विशाल तिलक झलकाहीं ❀ कचबिलोकि अलि अवलि लजाहीं ।।
पीत चौतनी सिरन्हि सुहाई ❀ कुसुमावलि बिच-बीच बनाई ।।
रेखा रुचिर कम्बु कल ग्रीवा ❀ जनु त्रिभुवन सुषमा की सीवाँ ।।

दो०—कुंजर मणि कण्ठा कलित, उरन्हि तुलसिका माल ।
वृषभ कन्ध केहरि ठवनि, बलनिधि बाहु विशाल ।। ५ ।।

चौपाई ।

कटि तूनीर पीत पट पाँधे ❀ कर शर धनुष वाम वर काँधे ।।
पीत यज्ञ उपवीत सुहाये ❀ नख-शिख मंजु महाछबि छाये ।।

रङ्ग भूमि में राजाओं का ध्यान ।

चौपाई ।

सुन्दर सुखद सकल गुण रासी ❀ ए दोउ बन्धु शम्भु उरवासी ।।

श्रीजनक द्वार आगमन समय का ध्यान ।

चौपाई ।

केकि कण्ठ द्युति श्यामल अंगा ❀ तडित विनिन्दक वसन सुरंगा ।।
व्याह विभूषण बिविध बनाये ❀ मंगल मय सब भाँति सुहाये ।।
शरद विमल बिधु वदन सुहावन ❀ नयन नवल राजीव लजावन ।।

कोहवर में सखियों का ध्यान ।

चौपाई ।

श्याम शरीर सुभाय सोहावन ❀ शोभा कोटि मनोज लजावन ।।
जावक युत पद कमल सुहाय ❀ मुनि मन मधुप रहत जहँ छाये ।।
पीत पुनीत मनोहर धोती ❀ हरति बाल रबि दामिनि जोती ।।
कल किङ्किणि कटि सूत्र मनोहर ❀ बाहु विशाल विभूषण सुन्दर ।।
पीत जनेउ महा छबि देई ❀ कर मुद्रिका चोरि चित लेई ।।
पिअर उपरना काँखा सोती ❀ दुहूँ आचरन्हि लगे मणि मोती ।।
नयन कमल कल कुण्डल काना ❀ वदन सकल सौन्दर्य निधाना ।।
सुन्दर भृकुटि मनोहर नासा ❀ भाल तिलक रुचिरता निवासा ।।
सोहत मौर मनोहर माथे ❀ मंगल मय मुकता मणि गाथे ।।

श्रीनारद कृत ध्यान ।

चौपाई ।

भुज प्रलम्ब उर नयन विशाला ❀ पीत वसन तनु श्याम तमाला ।।

वनयात्रा में ग्रामीण सखियों का ध्यान।

चौपाई।

एक टक सब सोहहिं चहुँ ओरा ❀ रामचन्द्र मुख चन्द्र चकोरा ॥
तरुन तमाल वरन तनु सोहा ❀ देखत कोटि मदन मनु मोहा ॥
मुनि पट कटिन्ह कसे तूनीरा ❀ सोहहिं कर कमलनि धनुतीरा ॥

श्रीचित्रकूट में श्रीभरतजी का ध्यान।

चौपाई।

शीश छटा कटि मुनिपट बाँधे ❀ तून कसे कर सर धनु काँधे ॥
वलकल वसन जटिल तनु श्यामा ❀ जनु मुनि वेष कीन्ह रति कामा ॥
कर कमलनि धनु शायक फेरत ❀ जिय की जरनि हरत हँसि हेरत ॥

श्री अत्रि जी का ध्यान।

चौपाई।

देखि राम छबि नयन जुड़ाने ❀ सादर निज आश्रम तब आने ॥

श्रीसुतीक्ष्ण जी का ध्यान।

चौपाई।

श्याम तामरस दाम शरीरम् ❀ जटा मुकुट परिधन मुनि चीरम् ॥
पाणि चाप शर कटि तूणीरम् ❀ नौमि निरन्तर श्रीरघुवीरम् ॥
अरुण नयन-राजीव सुवेशम् ❀ सीता नयन–चकोर–निशेशम् ॥

श्री शवरी जी का ध्यान।

चौपाई।

सरसिज लोचन बाहु विशाला ❀ जटा मुकुट शिर उर वनमाला ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ❀ शवरी परी चरण लपटाई ॥

श्री बाली कृत ध्यान।

चौपाई।

श्याम गात शिर जटा बनाये ❀ अरुण नयन शर चाप चढ़ाये ॥

अशोक वन में श्री जानकी जी कृत ध्यान।

चौपाई।

श्याम सरोज दाम सम सुन्दर ❀ प्रभु भुज करि-कर सम दशकन्धर ॥

श्री विभीषण कृत ध्यान।

चौपाई।

भुज प्रलम्ब कञ्जारुण लोचन ❀ श्यामल गात प्रणत-भय-मोचन ॥
सिंह कन्ध आयत उर सोहा ❀ आनन अमित मदन छबि मोहा ॥

काल नेमि कृत ध्यान।

चौपाई।

नील कञ्ज तनु सुन्दर श्यामा ❀ हृदय राख लोचन अभिरामा ॥

कुम्भकर्ण कृत ध्यान।

चौपाई।

श्याम गात सरसीरुह लोचन ❀ देखौं जाय तापत्रय-मोचन ॥

श्री तुलसी दास जी महाराज कृत ध्यान।

चौपाई।

जटा जूट दृढ़ बाँधे माथे ❀ सोहहिं सुमन बीच-बिच गाथे ॥
अरुण नयन वारिद तनु श्यामा ❀ अखिल लोक लोचन-अभिरामा ॥
कटि तट परिकर कस्यो निषङ्गा ❀ कर कोदण्ड कठिन सारंगा ॥

श्री शङ्कर भगवान कृत ध्यान।

चौपाई।

श्याम गात राजीव-विलोचन ❀ दीन बन्धु प्रणतारति-मोचन ॥

श्री सनकादि कृत ध्यान ।

चौपाई ।

श्यामल गात सरोरुह-लोचन ❀ सुन्दरता-मन्दिर भव-मोचन ।।

श्री कागभुशुण्डि कृत ध्यान ।

चौपाई ।

मरकत मृदुल कलेवर श्यामा ❀ अंग-अंग प्रति छबि बहु कामा ।।
नव राजीव अरुण मृदु चरना ❀ पदज रुचिर नख ससि दुतिहरना ।।
ललित अंग कुलिशादिक चारी ❀ नूपुर चारु मधुर रवकारी ।।
चारु पुरट मणि रचित बनाई ❀ कटि किङ्किणि कल मुखर सुहाई ।।

दो०—रेखा त्रय सुन्दर उदर नाभि रुचिर गम्भीर ।
उर आयत भ्राजत बिबिध बाल विभूषण चीर ।। ६ ।।

चौपाई ।

अरुन पाणि नख करज मनोहर ❀ बाहु विशाल विभूषण सुन्दर ।।
कन्ध बाल केहरि दर ग्रीवा ❀ चारु चिबुक आनन छबि सींवाँ ।।
कल-कल वचन अधर अरुनारे ❀ दुई-दुई दशन विशद वर वारे ।।
ललित कपोल मनोहर नासा ❀ सकल सुखद ससिकर सम हासा ।।
नील कञ्ज लोचन भव मोचन ❀ भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ।।
विकट भृकुटि सम श्रवन सुहाये ❀ कुञ्चित कच मेचक छबि छाये ।।
पीत झीन झँगुली तन सोही ❀ किलकनिचितवनि भावतिमोंही ।।
रूप रासि नृप अजिर विहारी ❀ नाचहिं निज प्रतिबिम्ब निहारी ।।

दो०—राम चरन रति जो चह, अथवा पद निर्वान ।
भाव सहित सो यह कथा, करउ श्रवन पुट पान ।। ७ ।।

छं०—रघुवंश भूषण चरित यह, नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ।
कलिमल मनोमल धोइ विनु श्रम, रामधाम सिधावहीं ।।

सत पञ्च चौपाईं मनोहर, जानि जो नर उर धरैं ।
दारुन अविद्या पञ्च जनित, विकार श्रीरघुवर हरैं ।।

दो०—मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुवीर ।
अस विचारि रघुवंश मणि, हरहु विषम भवभीर ।। ८ ।।
कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं को प्रिय दाम ।
तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहिं राम ।। ९ ।।

इति श्री राम ध्यान रामायण शतपञ्च चौपाईं ।

—:+:—

अथ दैनिक श्री सीताराम स्तुति

रक्ताम्भोजदलाभिरामनयनं पीताम्बरालंकृतं
श्यामांगं द्विभुजं प्रसन्नवदनं श्रीसीतया शोभितम् ।
कारुण्यामृतसागरं प्रियगणैर्भ्रातादिभिर्भावितं
वन्दे विष्णुशिवादिसेव्यमनिशं भक्तेष्टसिद्धिप्रदम् ।। १ ।।

ज्ञानमुद्राधरं राम सच्चिदानन्दविग्रहम् ।
ब्राह्मे मुहूर्त्ते चोत्थाय चिन्तयेद्रघुनन्दनम् ।। २ ।।

प्रातः स्मरामि रघुनाथमुखारविन्दं
मन्दस्मितं मधुरभाषि विशालभालम् ।
कर्णावलम्बि चलकुण्डलशोभिगण्डं
कर्णान्तदीर्घनयनं नयनाभिरामम् ।। ३ ।।

प्रातर्भजामि रघुनाथकरारविन्दं
रक्षोगणाय भयदं वरदं निजेभ्यः ।
यद्राजससदि विभज्य महेशचापं
सीताकरग्रहणमङ्गलमाप सद्यः ।। ४ ।।

प्रातर्नमामि रघुनाथपदारविन्दं

वज्राङ्क शादिशुभरेखिसुखावहं वै ।
योगीन्द्रमानसमधुव्रतसेव्यमानं
शापापहं सपदि गोतमधर्मपत्न्याः ॥ ५ ॥
प्रातः श्रये श्रुतिनुतां रघुनाथमूर्त्तिं
नसलाम्बुदोत्पलसितेतररत्ननीलाम् ।
आमुक्तमौक्तिकनशेषविभूषणाढ्यां
ध्येयां समस्तमुनिभिर्निजमुक्तिहेतुम् ॥ ६ ॥
प्रातर्वदामि वचसा रघुनाथनाम
वाग्दोषहारि सकलं शमलंनिहन्तृ ।
यत्पार्वती स्वपतिना सह भोक्तुकामा
भक्त्या सहस्रहरिनामसमं जजाप ॥ ७ ॥
यः श्लोक पञ्चकमिदं मनुजः पठेत
नित्यं प्रभातसमये नियतः प्रबुद्धः ।
श्रीरामकिङ्करजनेषु स एव मुख्यो
भूत्वा प्रयाति हरिलोकमनन्यलभ्यम् ॥ ८ ॥

इति श्री विश्वामित्रकृतं श्रीरामपञ्चकम् ।

—:-(०)-:—

अथ श्री जानकी प्रभात पञ्चकम् ।

स्मरामः प्रातः श्रीजनकतनयाचन्द्रवदनं
ललाटे श्रीखण्डं जलजनयनं राममुकुरम् ।
श्रवस्ताटङ्कार्चं भृकुटिकुटिलं कुन्ददशनं
कपोलश्रीपाण्डुं फलदमरुणोष्ठं मितहसम् ॥ १ ॥
स्मरामः प्रातः श्रीमिथिलनृपकन्याकरयुगं
सपद्मं सौवर्णाङ्गदवलयमंगुष्ठसुयवम् ।
नखांशुप्रावालं तलविजितसिन्दूरनिचयं

घनश्यामस्पर्शं सुमणिकटकांगुल्यविधरम् ॥ २ ॥
सदा नौमि प्रातः क्षितिपसुतपत्न्यंघ्रियुगलं
पयःफेनस्निग्धं नवकमलपत्रारुणजितम् ।
स्फुरल्लाक्षारागं घुसृणमसृणं नूपुरधरं
ध्वजाविन्द्वब्जेष्वंकुशपविधनुश्चिह्नमतुलम् ॥ ३ ॥
हृदि ध्यामः प्रातः सुयवसुकुमारांकुरजितां
विशालां सीतायाः कनकनववल्लीमपजयाम् ।
स्रजापुष्पैर्मुक्तैः सगलमणिरत्नैरुपचितां
तडिन्मूर्त्तिं पूर्त्तिं भुवनजनकामान्भगवतीम् ॥ ४ ॥
द्वयं ब्रूमः प्रातर्गतवयसि सीताक्षरमिदं
जगद्भव्यं दिव्यं भवभयहरंमन्त्रविपुलम् ।
चतुर्णां सञ्जन्यं बिधिहरिहरैर्ज्ञेयमनिशं
त्रयीविद्यामूलं सुखदमथ सेव्यं मुनिजनैः ॥ ५ ॥
इदं पञ्चश्लोकं व्युषसि मनुजो मानसफलं
धनापत्यंराज्यं व्रजति पतिवीरं पतिपरा ।
सुपुत्रं सुप्रज्ञां द्विजकुलमभीष्टं हरिपुरीं
पठेद्भक्त्या ध्यात्वा रहसि वचसाग्रेण हृदये ॥ ६ ॥

इति श्रीसिद्धेश्वरतन्त्रे श्रीरामलक्ष्मणसंवादे श्रीजानकी
प्रभात पञ्चकं समाप्तम् ।

—(+)—

अथ श्री युगलसरकार के अड़तालिस चरणचिह्न ।

श्रीरामचन्द्र नख चन्द्र चारु अति चरण कमलदोउ भ्राजैं ।
कमल पीठ सम परम मनोहर कागरंग रुचि राजैं ॥ १ ॥
अरुण तरणि सम सुभग चरण तल रेख बसे दोउ सोहैं ।
रथ, ध्वज, अष्ट कोण, हल, मूसल, श्री, अम्बर मन मोहैं ॥ २ ॥

चवँर, छत्र वर, कञ्ज, कल्पतरु, अंकुश मीनहि लेखो ।
पवि, स्वस्तिक सुन्दर सिंहासन, मुकुट, चक्र, यश पेखो ॥ ३ ॥
सर्प, वाण, यमदण्ड, ऊर्ध्व शुभ, दक्षिण पद जय माला ।
बायें पद गोपद, सरयू, क्षिति, घट, त्रैकोण, विशाला ॥ ४ ॥
जीवात्मा विन्दु भक्ति प्रद, कामवाण बिधु राका ।
जम्बूफल षट् कोण अर्द्ध शशि शङ्ख गदा सुपताका ॥ ५ ॥
त्रिवली वीण चन्द्रिका वंशी सुधाकुण्ड धनुहंसा ।
तूण सहित अड़तालिस ये शुभचिह्न करण भवध्वंसा ॥
जे दक्षिण पद रेख कुँवर के ते कुमारि के बाँधे ।
राम सखे भवमूल जात उठि सुमिरि प्रात के गाये ॥

इति श्रीरामसखेन्द्र निध्याचार्यकृत श्रीसीतारामचरण चिह्न वर्गनम् ।

—:०⌒०:—

दो०—दो वनचर दो वारिचर, चारि विप्र दो भूप ।
प्रात काल सुमिरण करैं, ते न परैं भवकूप ॥

प्रातः स्तुतिः ।

भये प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी मुनिमन हारी अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा, तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी ।
भूषण वन माला नयन विशाला शोभा सिन्धु खरारी ॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनन्ता ।
माया गुन ज्ञानातीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ॥
करुणा सुख सागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति सन्ता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रकट श्रीकन्ता ॥
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम-रोम प्रति वेद कहै ।
मम उर सो वासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥

उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै शिशु लीला अति प्रिय शीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥
दो०—विप्र धेनु सुर सन्त हित, लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुण गोपार ॥ १ ॥

सियावर रामचन्द्र जी की जय अयोध्या श्रीराम लला जी की जय ।

श्रीजानकी-जन्म-स्तुति ।

भइ प्रकट कुमारी भूमि विदारी जन हितकारी भयहारी ।
अतुलित छबिभारी मुनिमन हारी जनक दुलारी सुकुमारी ॥
सुन्दर सिंहासन तेहिं पर आसन कोटि हुताशन द्युतिकारी ।
सिर छत्र विराजै सखि गण भ्राजै निज २ काजै करधारी ॥
सुरसिद्ध सुजाना हनहिं निशाना चढ़े विमाना समुदाई ।
वरषहिं बहु फूला मंगलमूला अनुकूला सिय गुण गाई ॥
देखहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़े सुख बाढ़े उर अधिकाई ।
अस्तुति मुनि करहीं आनन्द भरहीं पायनि परहीं हरषाई ॥
ऋषि नारद आये नाम सुनाये सुनि सुख पाये नृप ज्ञानी ।
सीता अस नामा पूरण कामा सब सुख धामा गुणखानी ॥
सिय सन मुनिराई विनय सुनाई समय सुहाई मृदु वानी ।
लालनि तनु लीजै चरित सुकीजै यह सुख दीजै नृप रानी ॥
सुनि मुनिवर बानी सिय मुसुकानी लीलाठानी सुखदाई ।
सोवत जनु जागी रोवन लागी नृप बड़ भागी उर लाई ॥
दम्पति अनुरागेउ प्रेमसुपागेउ तेहि सुखलागी मनलाई ।
अस्तुति सिय केरी प्रेमलतेरी वरणि सुकेरी सिर नाई ॥

दो०—निज इच्छा मखभूमि ते प्रकट भयी सिय आय ।
चरित करति पावन परम वर्द्धन मोद निकाय ।। १ ।।

जनकपुर श्री जनक ललीजू की जय, अयोध्या श्रीरामललाजू की जय, पवनसुत श्रीहनुमानजी की जय, उमापति श्रीमहादेवजी की जय, रमापति श्रीरामचन्द्रजू की जय, वृन्दावन श्रीकृष्णचन्द्र जी की जय, बोलो भाई सब सन्तन की जय । अपने अपने श्रीगुरु महाराज की जय, जय जय श्रीसीताराम ।

श्लोक:

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चनुतं शरण्यम् ।
भृत्यार्त्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ।। १ ।।
त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराजलक्ष्मी
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम् ।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ।। २ ।।

(श्रीमद्भागवत)

दूर्वादलद्युतितनुं तरुणाब्जनेत्रं
हेमाम्बरं वरविभूषणभूषितांगम् ।
कन्दर्पकोटि कमनीयकिशोरमूर्त्तिं
पूर्त्तिं मनोरथभुवांभज जानकीशम् ।। ३ ।।
वन्दे विदेहतनयापदपुण्डरीकं
कैशोरसौरभसमाहृतयोगिचित्तम् ।
हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं
सन्मानसालिपरिपीतपरागपुञ्जम् ।। ४ ।।

(श्रीजानकीस्तवराज)

तवानुकूलो भवितुं न शक्तो न मानसं निर्विषयं विधातुम् ।
निजानुकूलं कुरु मां कृपालो! शक्त्या स्वया पापपयोधिमीनम् ।।५।।

हा राम हा नरवरोत्तम हा दयालो !
सीतापते रुचिरकुण्डलशोभिवक्त्र !
भक्तार्त्तिदाहक मनोहररूपधारिन्
मां बन्धनात्सपदि मोचय मा विलम्बम् ।। ६ ।।
हे राम नारायण दीनबन्धो
कृपा विधेया मयि पापसिन्धौ ।
निरर्थकं जन्म गतं मदीयं
न चिन्तितं ते चरणारविन्दम् ।। ७ ।।
भवाब्धिपोतं भरताग्रजंतं भक्तप्रियं भानुकुलप्रदीपम् ।
भतत्रिनाथं भुवनाधिपत्यं भजामि रामं भवरोगवैद्यम् ।। ८ ।।

(श्रीराम स्तवराज:)

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगम् सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महाशायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ।। ९ ।।
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।। १० ।।
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां बरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।। ११ ।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।। १२ ।।

आत्मसमर्पण मन्त्र ।

दासोऽहं शेषभूतोऽहं तवैव शरणं गतः ।
अपराधितोऽहं दीनोऽहं पाहि मां करुणाकर ।। १३ ।।
अपराधसहस्रंभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे ।
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात्कुरु ।। १४ ।।

श्रीरामभद्रजू का व्रत तथा श्रीकिशोरी जी का सिद्धान्त।

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम ॥ १५ ॥
पापानां वा शुभानां बधार्हाणां प्लवङ्गम।
कार्यं कारुण्यमार्येण न कश्चिन्नापराध्यति ॥ १६ ॥
(बा० रा०)

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥ १७ ॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥ १८ ॥
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ १९ ॥
आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम्।
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं ह्येतद्धि रामायणम् ॥ २० ॥
आदौ देविकदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनं
मायापूतनजीवतापहरणं गोवर्द्धनोद्धारणम्।
कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनं
ह्येतद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ॥ २१ ॥

दैनिक सायंकालीन स्तुति।

छं०—जय जय सुरनायक जनसुखदायक प्रणतपाल भगवन्ता।
गोद्विजहितकारी जय असुरारी सिन्धुसुता-प्रिय कन्ता ॥
पालन सुरधरनी अद्भुतकरनी मर्म न जाने कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहुअनुग्रह सोई ॥

जय जय अविनासी सब घट वासी व्यापक परमानन्दा।
अविगतगोतीतं चरितपुनीतं मायारहित मुकुन्दा ॥
जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिवृन्दा।
निसि वासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई सङ्ग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिन्त हमारी जानिअ भगति न पूजा ॥
जो भव-भय-भञ्जन मुनि-मन-रञ्जन गञ्जन-विपति बरूथा।
मन वच क्रम बानी छाड़ि सयानी शरण सकल सुरयूथा ॥
शारद श्रुति शेषा ऋषय अशेषा जाकहँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ॥
भववारिधि-मन्दर सब बिधि सुन्दर गुणमन्दिर सुखपुञ्जा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कञ्जा ॥

दो०—जानि सभय सुर भूमि सुनि, वचन समेत सनेह।
गगन गिरा गम्भीर भई, हरण शोक-सन्देह ॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव-भय दारुणं।
नव कञ्ज-लोचन कञ्ज-मुख कर-कञ्ज पद-कञ्जारुणम् ॥
कन्दर्प अगणित अमित छबि नव नील-नीरज-सुन्दरं।
पट-पीत मानहु तडित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरम् ॥
सिर-क्रीट कुण्डल तिलक चारु उदार अङ्ग विभूषणं।
आजानुभुज-शरचापधर संग्रामजित-खरदूषणम् ॥
भजु दीन-बन्धु दिनेश, दानव-दलन दुष्ट-निकन्दनं।
रघुनन्द आनँदकन्द कोशलचन्द दशरथ-नन्दनम् ॥
इति वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनिमनरञ्जनं।
मम हृदय-कञ्ज निवास करु कामादिखलदल-गंजनम् ॥

—:०:—

जय जनकनन्दिनि जगत-बन्दिनि जन-अनन्दिनि जानकी ।
रघुवीरनयन-चकोर-चन्दिनि वल्लभा प्रिय-प्राण की ॥
तव कञ्ज-पद-मकरन्द स्वादित योगिजन मन अलि किये ।
करि पान गिनत न आन हिय निर्वाण सुख आनत हिये ॥
सुख-खानि मङ्गल-दानि जन जिय जानि शरण जो जात है ।
तव नाथ सब सुख साथ करि तेहि हाथ रीझि विकात हैं ॥
ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति आदि निज मुख भाषहीं ।
तव कृपा नयन कटाक्ष चितवनि दिवस निशि अभिलाषहीं ॥
तनु पाय तुमहिं विहाय जड़मति आन मानत देवहीं ।
हतभाग सुरतरु त्याग करि अनुरागि रेडहिं सेवहीं ॥
यह आस रघुवरदास कीं सुख रासि पूरण कीजिये ।
निज चरण-कमल सनेह जनक-विदेहजा वर दीजिये ॥

दो०—मो सम दीन, न दीन हित, तुम्ह समान रघुवीर ।
अस विचारि रघुवंशमणि, हरहु विषम भव-पीर ॥ १ ॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं के प्रिय दाम ।
तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम ॥ २ ॥
प्रणत पाल रघुवंशमणि, करुणा-सिन्धु खरारि ।
गये शरण प्रभु राखिहैं, सब अपराध विसारि ॥ ३ ॥
श्रवण सुयश सुनि आयहुँ, प्रभु भञ्जन-भवभीर ।
त्राहि त्राहि आरति-हरण, शरण-सुखद रघुवीर ॥ ४ ॥
अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान ।
जन्म-जन्म रति रामपद, यह वरदान न आन ॥ ५ ॥
बार-बार वर माँगहुँ, हरषि देहु श्रीरङ्ग ।
पद सरोज अनपायिनी, भक्ति सदा सत्संग ॥ ६ ॥
परमानन्द कृपायतन, मन परिपूरण काम ।
प्रेम भक्ति अनपायिनी, देहु हमहिं श्रीराम ॥ ७ ॥

विनती करि मुनि नाइ शिर, कह कर जोरि बहोरि ।
चरण-सरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि ॥ ८ ॥
सीता अनुज समेत प्रभु, नील जलद-तन श्याम ।
मम हिय बसहु निरन्तर, सगुण रूप श्रीराम ॥ ९ ॥
एक मन्द मैं मोह वश, कुटिल-हृदय अज्ञान ।
पुनि प्रभु मोहिं विसारेहु, दीनबन्धु भगवान ॥ १० ॥
नहिं विद्या नहिं बाहु बल, नहिं खरचन कों दाम ।
मों से पतित पतंग की, तुम पति राखो राम ॥ ११ ॥
एक छत्र एक मुकुट मणि, सब वर्णन पर जोय ।
तुलसी रघुवर नामके, वरण विराजत दोय ॥ १२ ॥
राम नगरिया राम की, वसै गंग के तीर ।
अचल राज रघुराज को, चौकी हनुमत वीर ॥ १३ ॥
अवध धाम धामादि पति, अवतारन पति राम ।
सकल सिद्धिप्रद जानकी, दासन पति हनुमान ॥ १४ ॥
कामद गिरि सम गिरि नहीं, अवध धाम सम धाम ।
वन प्रमोद सम वन नहीं, राम नाम सम नाम ॥ १५ ॥
वह शोभा सुसमाज सुख, कहत न बनै खगेस ।
वरणहिं शारद शेष श्रुति, सो रस जान महेश ॥ १६ ॥
रामचन्द्र मुखचन्द्र छबि, लोचन चारु चकोर ।
करत पान सादर सकल, प्रेम-प्रमोद न थोर ॥ १७ ॥
राम वाम दिशि जानकी, लखन दाहिनी ओर ।
ध्यान सकल कल्यान मय, सुरतरु तुलसी तोर ॥ १८ ॥
नील-सरोरुह नील-मणि, नील-नीर-धर श्याम ।
लाजहिं तनु शोभा निरखि, कोटि-कोटि-शत काम ॥ १९ ॥
अस प्रभु दीन-बन्धु हरि, कारण रहित कृपाल ।
तुलसिदास रघुनाथ भजु, छाड़ि कपट जंजाल ॥ २० ॥
गुरु-मूरति-मुख चन्द्रमा, सेवक-नयन चकोर ।

अष्ट पहर निरखत रहूँ, गुरु मूरति की ओर ॥ २१ ॥
एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध ।
तुलसी संगति साधु की, हरै कोटि अपराध ॥ २२ ॥

श्री सियावर रामचन्द्र जी की जय, जनकपुर श्री जनक लली जी की जय, अयोध्या श्री रामलला जी की जय, पवनसुत श्रीहनुमानजी की जय, उमापति श्री महादेव जी की जय, वृन्दावन श्रीकृष्णचन्द्र जी की जय, बोलो भाई सब सन्तन की जय, अपने अपने श्री गुरुदेव महाराज की जय, जय जय सीता राम ।

पुनः ध्येयं से लेकर त्वमेव माता च पिता त्वमेव पर्यन्त के सभी श्लोकों से नित्य स्तुति करनी चाहिये ।

आरती का नियम

दो०—एक बार मुख मण्डल, दो कटि चरणन चार ।
सात आवरण सकल अंग, कीजै परम उदार ॥ १ ॥

आरती

नख सिख छबि-धर की, आरती करिये सियवर की ।
लाल पीत अम्बर अति साजै, मुख निरखत शारद शशि लाजै
तिलक झलक भालन पर राजै, कुमकुम केसर की ॥ १ ॥ आ०
शीशफूल कुण्डल झलकतु हैं, चन्द्रहार मोती हलरतु हैं
कर-कङ्कण की छबि छलकतु हैं, जगमग दिनकर की ॥ २ ॥ आ०
मृदु तरवन में अधिक ललाई, हास, विलास न कछु कहि जाई।
चितवनि की गति अति सुखदाई, मनही मन फरकी ॥ ३ ॥ आ०
सिंहासन पर चवँर ढुरत है, साज बजत जय जय उचरत है।
सादर अस्तुति देव करत हैं, लोटरनि अनुचर की ॥ ४ ॥ आ०

अथ शयन पद ।

पौढ़े सुख सेज सीताराम ॥ टेक ॥
आनँदकन्द अयोध्या नायक, जानकी भुज वाम ॥ पौढ़े ॥ १ ॥

कनक मन्दिर पुष्प शय्या कोटि उदय भये भान ॥ पौढ़े ॥ २ ॥
देवता सब चौंकि आये सन्मुख आये हनुमान ॥ पौढ़े ॥ ३ ॥
रामजी राजा गर्व-गञ्जन सकल पूरण काम ॥ पौढ़े ॥ ४ ॥
चोवा चन्दन और अरगजा कनक डब्बा भरि पान ॥ पौढ़े ॥ ५ ॥
दास तुलसी लिये ठाढ़े मेवा दाख बदाम ॥ पौढ़े ॥ ६ ॥

अथ माहात्म्य प्रकरण ।

गुरु-दीक्षा माहात्म्य ।

अदीक्षिता ये कुर्वन्ति जपपूजादिकाः क्रियाः ।
न फलन्ति क्रियास्तेषां शिलायामुप्तबीजवत् ॥ १ ॥
देवि दीक्षाविहीनस्य न सिद्धिर्न च सद्गतिः ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गुरुणा दीक्षितो भवेत् ॥ २ ॥

चौपाई ।

गुरु विन भव-निधि तरै न कोई ❀ जो विरिञ्चि शङ्कर सम होई ॥

नवधा-भक्ति ।

श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥ १ ॥
(श्रीमद्भा०)

चौपाई ।

प्रथम भक्ति सन्तन कर संगा ❀ दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥
दो०—गुरु-पद-पङ्कज सेवा, तीसरि भगति अमान ।
चौथि भगति मम गुण-गण, करइ कपट तजि गान ॥

चौपाई ।

मन्त्र जाप मम दृढ़ विश्वासा ❀ पंचम भजन सो वेद प्रकासा ॥
छठ दम शील विरति बहु कर्मा ❀ निरत निरन्तर सज्जन धर्मा ॥
सातँव सम मोहिं मय जग देखा ❀ मों ते सन्त अधिक करि लेखा ॥
आठँव यथा लाभ सन्तोषा ❀ सपनेहु नहिं देखइ पर दोषा ॥

नवम सरल सब सों छल हीना ❀ मम भरोस हिय हरष न दीना ॥
नवमहुँ एकहु जिन्ह के होई ❀ नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सोइ अतिशय प्रिय भामिनि मोरे ❀ सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे ॥

भक्ति-माहात्म्य ।

चौपाई ।

सुलभ सुखद मारग यह भाई ❀ भगति मोरि पुरान श्रुति गाई ॥
भक्ति हीन नर सोहै कैसे ❀ लवन बिना बहु विञ्जन जैसे ॥

दो०—चतुराई चूल्हे परे, भट्ठी परै अचार ।
कह तुलसी हरि भक्ति विनु, चारौ वर्ण चमार ॥ १ ॥

—:○○:—

कीर्त्तन-माहात्म्य ।

श्लोक ।

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥ १ ॥
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुख-सम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥ २ ॥
(श्रीराम रक्षास्तोत्र)
कृते यद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्त्तनात् ॥ १ ॥
नान्यः पंथा विद्यते चात्मलब्धौ नान्यो भावो विद्यते चापि लोके ।
नान्यज्ज्ञानं विद्यते चापि वेदेष्वेवं सीतानाममात्रं विहाय ॥ २ ॥
सीतया सहितं राम नाम जाप्यं प्रयत्नतः ।
इदमेव परं प्रेमकारणं संशयं विना ॥ ३ ॥
(शिवपुराण)

चौपाई ।

तीरथ अमित कोटि सम पावन ❀ नाम अखिल अघ पुञ्ज नसावन ॥

श्लोक ।

नाम्नोऽस्ति यावती शक्तिः पाप-निर्हरणे हरेः ।
तावत्कर्तुं न शक्नोति पातकं पापकी जनः ॥ १ ॥

चौपाई ।

चहुँ युग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ ❀ कलि विशेष नहिं आन उपाऊ ॥
कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई ❀ राम न सकहिं नाम गुण गाई ॥

चरणामृत-माहात्म्यम् ।

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि-विनाशनम् ।
श्रीरामपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥ १ ॥

भगवत-प्रसाद-माहात्म्य ।

रामार्चान्नं सकृद्येन भुक्तं पापिप्रपीडकाः ।
स शुद्धो धर्मकामार्थी याति रामपुरं शुभम् ॥
(शि० सं०)

दो०—चरणामृत जो लेत हैं, वाल भोग के हेत ।
तेउ वैकुण्ठै जात हैं, यम को धक्का देत ॥ १ ॥

वैष्णव-प्रसाद-माहात्म्य ।

कोटिजन्मार्जितं पापं ज्ञानतोऽज्ञानतोऽपि वा ।
सद्यः प्रणश्यते नृणां वैष्णवोच्छिष्टभोजनात् ॥ १ ॥
रामभक्तान्नशेषं तु यो हि भुङ्क्ते दिने दिने ।
सिक्थे सिक्थे स लभते चान्द्रायणशताधिकम् ॥ २ ॥

श्रीतुलसी-माहात्म्य ।

मूलेषु सर्वतीर्थानि पत्रेषु सर्व देवताः ।
शाखासु सर्वयज्ञानि तुलसि त्वां नमाम्यहम् ॥ १ ॥

तुलसीकाष्ठमालां यो धृत्वा भुंक्ते द्विजोत्तमः।
सिक्थे सिक्थे स लभते बाजिमेधफलं मुने ॥ २ ॥
यत्कण्ठे तुलसी नास्ति ते नरा मूढ़मानसाः।
अन्नं विष्ठा जलं मूत्रं पीयूषं रुधिरं भवेत् ॥ ३ ॥

प्रदक्षिणा-माहात्म्य।

अन्यदेशे कृतं पापं तीर्थदेशे विमुञ्चति।
तीर्थदेशे कृतं पापं प्रदक्षिणे विनश्यति ॥ १ ॥
प्रदक्षिणे कृतं पापं बज्रलेपं भविष्यति।
दर्शने माधवस्यापि भस्मी भवति पातकम् ॥
आजन्मसञ्चितात्पापान्मोचयिष्यति तन्मुने।

(स्क० पु०)

दण्डवत्प्रणाम-माहात्म्य।

पुरतो वासुदेवस्य दण्डवत्पततो भुवि।
पतन्ति पातकाः सर्वे नोत्तिष्ठन्ति पुनस्त्विह ॥

(पद्मपु०)

दान-माहात्म्य।

दारिद्र्यनाशनं दानं शीलं दुर्गतिनाशनम्।
अज्ञाननाशिनी प्रज्ञा भावना भयनाशिनी ॥

(चा० नी०)

एकादशीव्रत-माहात्म्य।

दो०—काशी सेवै अब्द शत, अचवै वारि केदार।
उभय सहस गोदान दे, तीरथ अटै अपार ॥ १ ॥
होम यज्ञ कोटिन करै, विप्र जिवाँवे कोइ।
एकादशि व्रत के रहे, सम न तबहुँ कोइ होइ ॥ २ ॥

श्लोक।

रबीन्दुग्रासे हरिजन्मकाले कन्याप्रदाने द्विजभोजने च।
प्राणप्रयाणे हरिवासरे च तत्रान्नभोजी नरकं प्रयाति ॥ १ ॥

ऊर्ध्वपुण्ड्रतिलक-धारण-माहात्म्य।

ललाटे धारयेदूर्ध्वपुण्ड्रं परमशोभनम्।
हरिद्राविन्दुसंयुक्तमश्वमेधफलं लभेत् ॥ २ ॥

भाल च रम्यतिलकं विवरे खदीप्तं रामाघ्रिविन्दुसहितं शुचिपीतवर्णम्।
कण्ठेतथातुलसिदाम लसद्भुजोवै तप्तेन वाणधनुषाङ्कितरामभक्तः ॥ ३ ॥

श्रीअवध-माहात्म्य।

चौपाई।

यद्यपि सब वैकुण्ठ वखाना ❀ वेद पुरान विदित जग जाना ॥
अवध सरिस प्रिय मोहि न सोऊ ❀ यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ ॥
अति प्रिय मोहि यहाँ के वासी ❀ मम धामदा पुरी सुखरासी ॥

याऽयोध्यापुरी सा सर्ववैकुण्ठानामेव मूलाधारा प्रकृतेः परा तत्सद्ब्रह्ममयी विरजोत्तरा दिव्या रत्नकोशाढ़्या तस्यां नित्यमेव श्रीसीतारामयोर्विहारस्थलमस्तीति। (वेद)

अथर्वण के उत्तरार्द्ध रहस्य में यह वाक्य है—जो श्री अयोध्यापुरी है वह सब वैकुण्ठों की मूलाधारा है और मूलप्रकृति से परे है, तत्सद्ब्रह्ममयी है, विरजा से उत्तर है, दिव्य रत्नकोशों से युक्त है, उस पुरी में श्रीसीतारामजू का नित्य विहार-स्थल है।

या देवानां पूरयोध्या तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्गो लोको ज्योतिषावृतः यो वैतां ब्रह्मणो वेदोऽमृतेनावृतां पुरीं तस्मै ब्रह्म च ब्रह्मा च आयुः कीर्त्ति प्रजां ददुरिति ॥ (वेद)

साम वेद में तैत्तरीय की श्रुति है कि देवों की अर्थात् दिव्य ज्ञान सम्पन्न नित्यमुक्त तथा मुक्त जीवों की जो पुरी है, उसका नाम श्री अयोध्या है उसमें हिरण्यमय कोश है। समस्त स्वर्ग लोक अर्थात् त्रिपादविभूति उसकी ज्योति से आच्छादित है, अमृत अर्थात् मोक्ष से आवृत ब्रह्म की उस पुरी को जो जानता है, उस ज्ञानी पुरुष को ब्रह्म अर्थात् परब्रह्म, ब्रह्मा हिरण्यगर्भ आयु कीर्ति प्रजा को देते हैं।

अयोध्या नगरी नित्या सच्चिदानन्दरूपिणी।
यदंशांशेन गोलोक-वैकुण्ठाद्याः प्रतिष्ठिताः॥
(वशिष्ठ संहिता)

विष्णोराद्या पुरी चेयं क्षितिं न स्पृशति द्विज।
विष्णोः सुदर्शने चक्रे स्थिता पुण्यकरी स्थिता॥
अ० १-६२॥

अथ श्रीसरयू-माहात्म्य।

मन्वन्तरसहस्रैस्तु काशीवासेन यत्फलम्।
तत्फलं समवाप्नोति सरयूदर्शने कृते॥ २७॥
मथुरायां कल्पमेकं वसते मानवो यदि।
तत्फलं समवाप्नोति सरयूदर्शने कृते॥ २८॥
दो०—कोटिकल्प काशी बसे, मथुरा कल्प हजार।
एक निमिष सरयू बसे, तुलै न श्रुति अनुसार॥ १॥

श्रीचित्रकूट-माहात्म्य।

चित्रकूटसमं नास्ति तीर्थं ब्रह्माण्डगोलके।
यत्र श्रीरामचन्द्रोऽसौ सीतया सहितः सुधीः॥ १॥

चौपाई।

सप्त पुरी चारौ हरिधामा ❀ तिन्ह महँ चित्रकूट अभिरामा॥

श्रीमन्दाकिनी-माहात्म्य।

पुनाति कीर्त्तिता पापं दृष्टा भद्रं प्रयच्छति।
अवगाहा च पीता च पुनात्यासप्तमं कुलम्॥ १॥

चौपाई।

सुरसरि धार नाउ मन्दाकिनि ❀ जो सब पातक पोतक डाकिनि॥
मन्दाकिनि अस्नान प्रतापा ❀ सात जन्म कर मेटत पापा॥

मातापिता-माहात्म्य।

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात्सर्वयत्नेन पूजयेत्॥ १॥

भक्तों के लक्षण।

चौपाई।

सरल स्वभाव न मन कुटिलाई ❀ यथा लाभ सन्तोष सदाई॥
वैर न विग्रह आस न त्रासा ❀ सुखमय ताहि सदा सब आसा॥
अनारम्भ अनिकेत अमानी ❀ अनघ अरोष दक्ष विज्ञानी॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा ❀ तृण सम विषय स्वर्ग-अपवर्गा॥
भगति पक्ष हठ नहि शठताई ❀ दुष्ट तर्क सब दूर बहाई॥

दो०—मम गुण-ग्राम नाम रत, गत ममता मद मोह।
ताकर सुख सोइ जानइ, परानन्द सन्दोह॥

—:o:—

नम्रनिवेदन।

आदरणीय तथा प्यारे सज्जनों! आप लोगों को विदित है कि यह संसार असार एवं नाशवान है।

भूख, प्यास, निद्रा, भय, विषयभोग ये प्रायः सभी कूकर-शूकर,

कीट-पतंग आदि योनियों में भी स्वाभाविक समान रूप से प्राप्त होते हैं, केवल मोक्ष साधन की सुलभता ही इस मानव का विशेष गुण है अतएव परात्पर प्रभु श्रीराघवेन्द्र सरकार स्वयं श्रीरामायणजी में पुरवासियों से कह रहे हैं कि--

चौपाई।

बड़े भाग मानुष तनु पावा ❀ सुर-दुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा ॥
यहि तनुकर फल विषय न भाई ❀ स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई ॥
नर-तनु पाइ विषय मन देहीं ❀ पलटि सुधा ते शठ विष लेहीं ॥
ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई ❀ गुञ्जा ग्रहइ परसमणि खोई ॥
नर-तनु भव-वारिधि कहुँ बेरो ❀ सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥
करणधार सद्गुरु दृढ़ नावा ❀ दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥

दो०--जो न तरै भव सागर, नर समाज अस पाइ।
सो कृत निन्दक मन्दमति, आत्माहन गति जाइ ॥ १ ॥
सो परत्र दुख पावइ, सिर धुनि-धुनि पछिताय।
कालहि कर्महि ईश्वरहि, मिथ्या दोष लगाय ॥ २ ॥

श्रीकागभुशुण्डी जी महाराज का भी यही सिद्धान्त है।

चौपाई।

"राम भजन विनु सुनहु खगेशा ❀ मिटै न जीवन केर कलेशा" ॥

सदाशिव श्री भोलेनाथ जो अपना यही अनुभव जगद्धात्री श्रीपार्वती जी को सुना रहे हैं--

चौपाई।

"उमा कहौं मैं अनुभव अपना ❀ सत हरि भजन जगत् सब सपना" ॥

इसलिये अज्ञान-निद्रा से जागें, और किसी ज्ञानी महापुरुष के पास जाकर उन्हें अपनी सेवा-शुश्रूषा से प्रसन्न करें पुनः उनसे अपने गन्तव्य स्थान का मार्ग तथा प्राप्ति का साधन ज्ञात करके अविलम्ब चल पड़ें, आलस न करें, क्योंकि साधन मार्ग में प्रमाद के समान अपना कोई भी शत्रु नहीं है।

श्री सद्गुरु-भगवान की कृपा से गन्तव्य मार्ग पर चलते हुये लोक में जगन्नियन्ता, सर्वेश्वर अपने प्यारे प्रभु की प्रसन्नता के लिये अनासक्त भाव से माता-पिता, बन्धु-बान्धव, स्त्री-पुत्रादि सभी परिवार के साथ सम्बन्धानुसार हितकर व्यवहार भी निष्काम भाव से करते रहें। श्रीसद्गुरु महाराज को साक्षात् भगवान्--का प्रत्यक्ष स्वरूप समझकर उनकी आज्ञा में अटल रहें।

यथाः--दो० सद्गुरु कहें सो कीजिये, चाहे सर्व नशाय।
कार्त्तिकेय सद्गुरु कृपा, परम मोक्ष मिलि जाय ॥

तथा "सन्त भगवन्त अन्तर निरन्तर नहीं
मों ते सन्त अधिक कर लेखा" इस सिद्धान्तानुसार प्रभु के कृपापात्र भक्तों की सेवा को अपने मार्ग में विशेष सहायक समझकर उसे पूर्ण रूप से अपनाने का प्रयत्न करें।

"आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा" यह भी कभी न भूलें एवं पूर्व कर्मानुसार अनुकूल-प्रतिकूल सभी प्रकार की प्राप्त परिस्थितियों को अपने प्यारे का प्रसाद समझकर उन्हें प्रसन्नता पूर्वक शिरोधार्य्य करते हुये, अधिकारानुसार आचार-विचार पूर्वक सन्ध्या वन्दन, हवन, तर्पण, सेवा, पूजा, दया, दान, एकादशी, श्रीराम-नवमी आदि व्रत, श्रीतुलसी जी, गो, ब्राह्मण, दुखी, रोगी अतिथियों की सेवा करते हुये श्री भगवान के सुमिरण-भजन में तत्पर रहकर जीवन को सार्थक बनाने का प्रयत्न अबाध गति से निरन्तर करते रहना चाहिए यही मानव शरीर का चरम लक्ष्य है।

विनीतः--

लेखक तथा संगृहीता-वैष्णव श्रीराम सखेन्द्र निध्याचार्य वंशोद्भव स्वामी श्री रामकुमार शरण जू महाराज--कृपापात्र--रामलखन शरण
श्री प्रमोद वन विहारिणी-विहारी जू का मन्दिर, श्रीप्रमोदवन
श्री चित्रकूट जिला सतना (म० प्र०)

चैत्रसुदी एकादशी बुधवार सम्बत् २०२१ वि०

श्रीसीतारामार्पणमस्तु

शुभं भूयादिति—शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ॥
दुर्जनः सज्जनो भूयात्सज्जनः शान्तिमाप्नुयात् ।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान्विमोचयेत् ॥

हे नाथ ! आपकी कृपा से:—

विश्व का कल्याण हो !

सभी कर्त्तव्यपरायण हों ॥

परस्पर प्रेम हो !!

श्री करुणानिधये नमः ।

हमारी श्री किशोरी जी की

जय जय जय

—:o:—

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा तेजकुमार प्रेस, (प्रा०) लि० में मुद्रित ।

श्री किशोरी जी की जय

शुभ-सन्देश

प्रेमियों का परम-धन

श्री जानकी-चरितामृत

दो०—हिन्दी भाषा युक्त यह, सिय चरणामृत तात ।
सर्वसुखद, कल्याण कर, केहि सुमतिहिं न सुहात ॥ १ ॥

नाम-रूप-लीलादि युत, जो चह सिय-पद-प्रेम ।
पढ़े सुने सो जानकी, चरितामृत कर नेम ॥ २ ॥

निमि कुल की वंशावली, मिथिला धाम-महत्व ।
नाम-रूप-गुण-गण सहित, सीता-दिव्य परत्व ॥ ३ ॥

महि द्वारा प्राकट्य सों, शुभ विवाह-पर्यन्त ।
हृदय भाव उमड़ावनी, सिय-लीला विलसन्त ॥ ४ ॥

सहस-नाम सह जानकी, अष्टोत्तर शत-नाम ।
अष्टयाम-सेवादि सुख, विषय अनेक ललाम ॥ ५ ॥

इस चरितामृत ग्रन्थ में, वर्णित युत विस्तार ।
तासों देखन योग्य यह, सब ग्रन्थन को सार ॥ ६ ॥

सीय-उपासक जनन हित, यहि सम सुखद न आन ।
जनकलली-पद-रति-जनक, पढ़िहहिं सुनहिं सुजान ॥ ७ ॥

जनकलली की देन यह, हिरदय से अपनाय ।
पूर्ण मनोरथ होइये, निःसन्देह सुभाय ॥ ८ ॥

अष्टोत्तर अध्याय शत, का यह ग्रन्थ पुनीत ।
पढ़े, सुनै, हिरदय धरे, ले रघुवर को जीत ॥ ६ ॥

पृष्ठ संख्या १३५०, न्यौछावर १२)

ग्रन्थ-प्राप्तिस्थान:—

१—पं० श्री राम नारायण लाल शर्मा, श्रीनिवास (बङ्गला नं० १९) केन्टूनमेण्ट, फैजाबाद (उ० प्र०)

२—पं० श्री राम दुलारी शरण जी महाराज, सुन्दरसदन, अग्निकुण्ड, श्री जनकपुर धाम (बिहार)

३—श्री सीताराम शरण जी कीर्त्तनिया, श्री चन्द्रकला कुञ्ज, लोहा बाजार सीतामढ़ी, जि० मुजफ्फरपुर (बिहार)

४—श्री बद्री प्रसाद जी सर्राफ, सदरबाजार, लखनऊ

सर्वेश्वरी श्री किशोरी जी की जय ।

—:o:—